आचार्य जयसेन द्वितीय

जीवन-परिचय : आचार्य जयसेन द्वितीय अमृतचन्द्रसूरि के समान कुन्दकुन्द के ग्रन्थों के टीकाकार हैं। वे मूलसंघ के विद्वान आचार्य वीरसेन के प्रशिष्य और सोमसेन के शिष्य थे। जयसेन मालूसाहू के पौत्र और महीपति साहू के पुत्र थे। उनका बाल्यकाल का नाम चारुभट था। चारुभट बचपन से ही जिन-चरणों के भक्त और आचार्यों के सेवक थे। चारुभट जब दिगम्बर मुनि हो गये तब उनके तपस्वी जीवन का नाम जयसेन हो गया।

आचार्य जयसेन द्वितीय का समय ई. सन् की 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध या 12वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य जयसेन द्वितीय की तीन रचनाएँ प्राप्त हैं और तीनों का नाम एक ही है—

1. तात्पर्यवृत्ति : जयसेनाचार्य ने कुन्दकुन्दाचार्य के समयसार, पंचास्तिकाय और प्रवचनसार तीनों ग्रन्थों पर संस्कृत भाषा में टीका बनाई, जिसका नाम तात्पर्यवृत्ति है। वृत्ति की भाषा अत्यन्त सरल है।

इनकी टीका की प्रमुख विशेषता यह है कि वे पहले प्रत्येक गाथा के पदों का शब्दार्थ स्पष्ट करते हैं, उसके बाद 'अयमत्राभिप्राय:' (यहाँ इसका अभिप्राय यह है)—ऐसा लिखकर उसका स्पष्टीकरण करते हैं।